रात्रिक्लास 12-4-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बाप कहते हैं मन्मनाभव। देह सहित देह के सभी सम्बन्ध को छोड़ मामेकं याद करो। तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। तुम सतोप्रधान बन फिर राज्य करेंगे। तुम राज्य करते थे परन्तु भूल गये हो। तो बाप कहते हैं फिर तुम बच्चों को सुनाता हूं। अभी वापस चलना है। मुझे याद करो तो पावन बनेंगे। 84 का चक्र भी सुनाया। अभी इन जैसे देवी गुण धारण करो तो विश्व के मालिक बन जायेंगे। शिव बाबा भण्डारा भी भरपूर करते हैं। तो खुशी में बहुत रहना चाहिए। फालतू बातें न सुननी चाहिए। बाप कहते हैं मैं जो सुनाऊं वह सुनो। हरमुई-संगमुई न सुनो। कान बन्द कर दो। और तो बाबा मेहनत देते नहीं हैं। हां विकार के लिए तंग भी करते हैं। यह तो आसुरी सम्प्रदाय का काम ही है। फिमेल्स को तंग करते हैं। फिमेल मेल को कम तंग करती है। तो अभी विकार से बचना है। जबरदस्ती करते हैं तो उनका दोष है। तुम लाचार हो पड़ती हो। अब जरा भी खवास न हो। जीतना है काम को। क्रोध को नहीं। काम पर जीत पानी है। बेहद का बाप कहते हैं काम को जीतो तो जगत जीत बनो। शिव को न माने कृष्ण को माने परन्तु मुख्य बात है काम पर जीत पहन जगत जीत बनो। यह जगतजीत है ना। इन्हों ने कोई लड़ाई नहीं की। यह है पवित्रता की ताकत। मुख्य है पवित्रता। बाबा के साथ योग लगाने से पवित्र बन जायेंगे। जो सुनते हैं उनको दिल से लगता है। फिर कबनीचे कब ऊपर भी होते हैं। इसमें देवी गुण भी चाहिए। आसुरी गुण होंगे तो तंग करेंगे। दो फिल्ते एक समान नहीं होते हैं। तुम जैसे वनवा में हो। जेवर आद कुछ भी नहीं पहनते हो। इन चीजों से दिल नहीं लगती है। बुधि योग जेवर आद में चला गया तो फिर पड़ेंगे। सारी दुनिया से वैराग्य। तुम आत्मा अकेला हो गया। वैराग्य आता है तो सभी कुछ त्याग करना होता है। यह है पुरुषार्थ करना। अकेले आये अकेले जाना है। जाना भी है याद करते। क्योंकि पतित है सो पावन बनना है। यह तो बहुत ही सहज है। पुकारते भी हैं आकर हमको पावन बनाओ। पानी की नदियां तो सतयुग में होती नहीं है। वहां जरूरत ही नहीं है। यहां बेअदबी है। तो अभी बाप तुमको सुखधाम का मालिक बनाते हैं। बनना भी जरूर है। दु:खधाम से जाना है शान्तिधाम। याद भी करो तो पवित्र भी रहो कोई तकलीफ नहीं। दो बाप तो जरूर बताओ। तीसरे बाप से तो कुछ भी नहीं मिलता। सिर्फ उनके ध्रु मिलता है। इन से कुछ मिलने का नहीं है। बाप बच्चों को एडाप्ट भी करते हैं। यह जैसे बीच में दलाल है। दलाल तो मिलेंगे ना। सौदा करते हैं ना। पैसे की तो बात ही नहीं। तुम सभी को रास्ता बताते हो जितना जो बहुतों को शान्तिधाम सुखधाम का रास्ता बताते हैं उतना बहुत फायदा मिलता है। बच्चे बैठे हैं बुधि में है घर जाना है। बाबा आया हुआ है घर ले चलते हैं। बच्चों में गुप्त खुशी होनी चाहिए। बाकी बाबा बच्चों के मददगार तो बनते ही हैं। तो बाप प्यार से देखते हैं। जो जास्ती बहुतों को रास्ता बताते हैं वह आत्मा जास्ती याद रहती है। बाप उनको याद करते हैं। तो उनको भी बाप की कशिश होती है। पाप कट जायेंगे। बाप अपने तरफ खेंच कर ले आते हैं। पवित्र बनने की मेहनत है। बाप आकर भटकने से छुड़ाते हैं। भटकने को अंधियारा रात कहा जाता है। चार्ट भी सच लिखना है। बाप को याद करना गोया घर और राजाई को याद करना है। वर्सा तो याद ही है। ऐसी बातें और कोई समझाते नहीं। एक ही सत का संग मिलता है। बाबा 2 करते रहो। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। इसलिए बाबा ने कहा था कि प्रभातफेरी में यह बताओ हम पीस स्थापन कर रहे हैं श्रीमत पर। परमपिता परमात्मा बिगड़ कोई भी शान्ति स्थापन कर न सके। कुम्भकरण के नींद से जागो। विनाश खड़ा है। नहीं तो टू लेट हो जायेंगे। सभी सालोगन बोलो। ब्राह्मण याद की यात्रा में रहते हैं। यह है रूहानी यात्रा। सुप्रीम बाप को याद करना है। सच्चखुंड अपने घर पहुंच जायेंगे। तुम जानते हो भक्ति अभीपूरी होती है। हम है पुरुषोत्तम संगम युग पर। जितना याद में रहे किसको सुनायेंगे। अपने को बाप का बच्चा समझो। हम भाईयों को बताते हैं। ऐसे समझेंगे तो बल मिलेगा। ज्ञानवान सकियां तो बहुत बताई है। बच्चे घुटा बैठते हैं। जितना देही अभिमानी बनने को पुरुषार्थ करेंगे तो कर्म इन्द्रियां वश हो जायेंगी। कर्म इन्द्रियों को वश करने का उपाय ही है याद का। अच्छा बच्चों को गुडनाइट।